INDIAN STREAMS RESEARCH JOURNAL
ISSN NO : 2230-7850
IMPACT FACTOR : 5.1651 (UIF)
VOLUME - 13 | ISSUE - 7 | AUGUST - 2023

मीडिया का समाज पर प्रभाव

डॉ. अमित कुमार पटेल
सहायक प्राध्यापक, शिक्षा विभाग, श्री राम कॉलेज सारागांव, रायपुर (छ.ग)

भूमिका :–

आधुनिक युग में मीडिया का आशय समाचार पत्र, पत्रिकाओं टेलीविजन, रेडियो, इन्टरनेट और सोशल मीडिया से है । हमारा देश दिन प्रतिदिन प्रगति के मार्ग पर बढ़ रहा है । अब समय डिजिटल का हो गया है । सभी कार्य कम्प्यूटर एवं इन्टरनेट के माध्यम से किया जा रहा है । आज व्यक्ति इतना अधिक सुविधा जनक हो गया है कि वह पलभर में विष्व की सम्पूर्ण जानकारी एकत्र करने के लिए ललायित रहता है । मानव एक सामाजिक प्राणी है और वह सदा किसी न किसी के सम्पर्क में रहना चाहता है । मीडिया लोकतंत्र का चौथा स्तम्भ है और यह समाज के आंतरिक वर्गो तक अपनी पहुॅच से सरकार की समस्त नीतियों के लाभ सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है । वे सरकार और देश के नागरिकों के बीच सबंध बनाये रखने में एक कड़ी के रूप में कार्य करती है । लोग मीडिया पर विश्वास करते है । मीडिया का सीधा असर दर्शको पर भी पड़ता है । इस सूचनाओं का तंत्र कहा जाता है । मीडिया के माध्यम से सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों के परिणामों की विवेचना की जाती है । भाषा जन संचार माध्यमों के लिए मीडिया एक उपयोगी उपकरण है । यह समाज के राजनीतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक जीवन पर गहरा प्रभाव डाल रही है । लोग अपने विचार स्वतंत्र रूप से मीडिया के माध्यम से सरकार तक पहुंचा रहें हैं ।

मीडिया आज समाज के सभी महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा करकें अपना प्रभाव दिखा रही है । यह सभी क्षेत्र में अग्रणी है । मीडिया लोकतांत्रिक ओदेशों के सजग प्रहरी के रूप में लोकतंत्र के चौथें स्तम्भ मीडिया राष्ट्रीय विकास को गति प्रदान करने एवं समाजिक परिवर्तन को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण योगदान है । मीडिया पक्ष–विपक्ष के सकारात्मक पहल का समर्थन एवं नकारात्मक कार्यो की अलोचना करने की अदभुत क्षमता रखता है । मीडिया का अधिकाधिक समाजीकरण की सशक्त राष्ट्र निर्माण को ठोस आधार बन सकता है और उसकी सांस्कृतिक संबद्धता ही उसे सही दिशा व सक्षम पहचान दिलाने में केन्द्रिय भूमिका निभा सकती है ।

मीडिया समाज की दशा और दिशा दोनो को परिवर्तन करने में सक्षम है । लेकिन वह अपने दायित्वों का निर्वहन उंची पहुंच वाले राजनीतिज्ञों के दबाब के कारण सही ढंग से नही कर पा रही है । इसलिए समाज से धीरे–धीरे मीडिया पर से लोगों का विश्वास कम होते जा रहा है । मीडिया को अपनी विश्वसनीयता को बनाये रखने के लिए इन परिस्थितियों से उबरना होगा । मीडिया चाहे तो वह राजनीतिज्ञों अथवा तानाशाहों की ईट से ईट बजा सकता है । भ्रष्टाचार को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है । मजदूरों, गरीबो और किसानों को उनका हक दिला सकता है । मीडिया की पहुंच विस्तृत एवं व्यापक है वह गरीबों किसानों को सरकार की विकासशील योजनाओं की जानकारी से अवगत करा सकता है और इनके जनजीवन, रहन सहन में परिवर्तन ला सकता है । मीडिया हॅू मैं की चार लाइनेः–

'' मैं सिर्फ पढ़ने के लिए नहीं, लड़ने कि लिए भी । मनुष्यता जिसका पक्ष है, उसके लिए जो हाशिये पर है, उनका पक्ष हूं मै । उजले दांत की हंसी नहीं, मीडिया हूं मैं । सूचनाओं की तिजारत और जन के सपनों की लूट के विरुद्ध । जन के मन में जिंदा रहने के लिए पढ़ना मुझे बार–बार । मेरे साथ आते हुए अपनी कलम, अपने सपनों के साथ । अपने समय की जिरह करती बात बोलेगी । भेद खोलगी बात ही । ''

मीडिया का समाज पर प्रभाव :–

मीडिया का प्रभाव देश की संस्कृति और समाज पर व्यापक रूप से पड़ता है । मीडिया की यह महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है कि देश की वास्तविकता की सही तस्वीर जनतंत्र तक पहुंचाये। किसानों की समस्याएँ, मजदूरो की समस्याओं, कुपोषण, वंचित वर्ग एवं पिछड़े वर्गो की आवाज बनकर जनतंत्र एवं सरकार के मध्य सेतु का कार्य करता है । मीडिया संचार का एक बहुत आसान और मजबूत तरीका है । मीडिया का समाज पर गहरा प्रभाव है । मीडिया के माध्यम से लोगों तक ज्ञानवर्धक बातें एवं देश–दुनिया की तात्कालिक घटनाएँ पल भर में प्राप्त हो जाती है । मीडिया के व्दारा लोगों को अपनी सृजनात्मक क्षमता को पूरी दुनिया में सबके सामने प्रस्तुत करने का एक अच्छा प्लेटफार्म मिला है । इसके माध्यम से छात्रों का सर्वांगीण विकास किया जा रहा है ।

अभिव्यक्ति की आजादी :– आज मीडिया के माध्यम से व्यक्ति निःसंकोच होकर स्वतंत्र रूप से अपने विचार रख रहें है । आज सोशल मीडिया अभिव्यक्ति का सशक्त साधन बन गया है । अन्याय एवं भ्रष्टाचार के खिलाफ आवाज उठाने का साधन बन गया है ।

ज्ञान का भण्डार :–मीडिया समुद्र की तरह अथाह है । मीडिया एवं सोशल मीडिया आजकल ज्ञान का भण्डार बन गया है । सभी क्षेत्र में अग्रणी है ,चाहे वह शिक्षा, कृषि ,क्रिकेट, विज्ञान, तकनीकी के क्षेत्र में हो सभी की जानकारी मीडिया के माध्यम से सेकंडों में प्राप्त होता है ।

जन–जागरण का साधन :– मीडिया समय–समय पर नागरिकों को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करता है । सरकार की अच्छी नीतियों से अवगत कराता है ।

व्यापार बढ़ानें का साधन :– मीडिया का क्षेत्र व्यापक होने के कारण हम अपने व्यापार का प्रचार–प्रसार करके ज्यादा से ज्यादा लोगो तक पहुंचा सकतें हैं । जिससे व्यापर में बृद्धि होगी आय का साधन सशक्त हो जायेगा ।

भ्रष्टाचार कम करने में :– देश में भ्रष्टाचार पर स्टिंग आपरेशन के माध्यम से सफेदपोशों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों का काला चेहरा लोकतंत्र के सामने उजागर करता है ।

मीडिया का समाज पर दुस्प्रभाव :–

तकनीकी के बढ़ते आयामों ने भले ही आज संपर्क के साधनों को बेहद आसान एवं सस्ता बना दिया है लेकिन इसका दुष्परिणाम हमारा समाज भुगत रहा है। सोशल मीडिया एक अभिशाप बनता जा रहा है । आज युवाओं में तेजी से बढ़ रहे सोशल मीडिया के प्रयोग के कारण मानसिक रूप से बीमारों की संख्या बढ़ रही है । कुछ समय के लिए यदि युवओं को सोशल मीडिया से दूर कर देने से उनमें बेचैनी बढ़ जाती है । किशोर वे किशोरियों में अकेलापन, आत्मविश्वास की कमी, अग्रसिव होना, चिड़चिड़ापन और उन्माद प्रमुख रूप से दिखाई पड़ते है । पठन–पाठन में रुचि नही लगना, एकाग्रता की कमी हो रही है । देर रात तक जागना व चैटिंग करने की लत पड़ती जा रही है । यौन हिंसा की घटनाओं को कहीं न कहीं से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से बढ़ावा दिया जा रहा है । सोशल मीडिया में अधिक समय बिताने के कारण युवा बच्चे गलत लोगो की संगति में पड़ जाते है और अपना भविष्य खराब कर देते है । समाज मे अच्छे बुरे सभी तरह के लोग रहते । कुछ असमाजिक लोग सोशल मीडिया पर अफवाह फैला देते है । झूठी तस्वीर, वीडियों को एडिट करके लागों तक प्रसारित कर देतें है जिससे कई तरह की अपराधिक घटनाएँ हत्याएँ दंगें आदि का जन्म होता है । जिसके कई उदाहरण आपको देखने को मिलता है । वास्तविकता से दूर ले जा रहा है ।

कुछ भी दिखाने के लिए आजकल अभद्र एवं अश्लीलता दिखाई जाती है, कई बार परिवारिक चैनल में भी ऐसे प्रोग्राम आते है कि परिवार के साथ बैठकर देखने में असमंजस महसूस करते है । टीवी मे बढ़ते चैनल

की वजह से अधिकतर लोग टीवी के सामने ही बैठकर चैनल बदल–बदलकर प्रोग्राम देखते रहते हैं और इनकी जिंदगी बस टीवी के इर्दगिर्द ही घूमती है मास मीडिया एवं सोशल मीडिया के कार्यक्रम में नशा सिगरेट तंबाकू शराब का सेवन भी खुलेआम दिखाया जाता है इसे देखकर बच्चे प्रभावित होते है और जीवन में उतार लेते है मीडिया ने जातिवाद को बढ़ावा दिया है कई बार ये किसी धर्म विशेष के लिए ऐसा बोल जाते है जिससे उस धर्म के लोग आहित होते है और कई बार ये मसला साम्प्रदायिक दंगे का रूप धारण कर लेते है किसी व्यक्ति विशेष के बारे में कई बार गलत खबर दिखा दी जाती है जिससे उस इन्सान की प्रतिष्ठा खराब होती है ।

निष्कर्ष :–

उपरोक्त शोध–पत्र के आधर पर यह कहा जा सकता है कि मीडिया लोकतंत्र का चौथा स्तम्भ है । मीडिया की भूमिका समाज को उनके लोकतांत्रिक अधिकारों से अवगत कराने और लोकतंत्र के तीनो संस्थानों से विरोध करने के लिए है । समाज से संबंद्धित मुददो पर , जब सरकारी संस्थान भ्रष्ट और सत्तावादी हो जाते है, तब मीडिया करोड़ो लोगों की आवाज बनकर आवाज उठाती है । मीडिया सत्ताधारी, विपक्ष, केन्द्र, व्यक्ति और संस्थाओं के बीच संबंध बनाने का कार्य करता है । किसी देश की विकास व प्रगति में मीडिया का बहुत बड़ा योगदान होता है । मीडिया मनोरंजन का एक महत्वपूर्ण साधन है । समाज का निर्माण व पुनर्निर्माण मीडिया के व्दारा किया जा सकता है । मीडिया के सामने बड़े से बड़े राजनेता, उद्योगपती आदि सभी सिर झुकाते है । मीडिया वरदान के साथ अभिषाप भी है । मीडिया को अभिव्यक्ति की आजादी मिलनी चाहिए और मिलती भी है । लेकिन जब मीडिया धन के लालच में अपनी जिम्मेदारी का पूरी तरह से निर्वहन नही करता है तब लोगों का विश्वास इस तंत्र से खत्म हो जाता है । भारतीय मीडिया की विश्वसनीयता तेजी से खत्म हो रही है । रसूखदारो एवं राजनेताओ के प्रभाव से खबरो की गुणवत्ता में कमी आई है । वे स्वतंत्रता की सीमा को लांघ रहें हैं । समाचार पत्र विज्ञापन पत्र बन गया है । सकारात्मक समाचारों के लिए स्थान ही नही मिलता । यदि मिलता भी है तो बीच या अंतिम पेज के किसी एक तरफ कोनें में । अतः मीडिया को अपनी जबाबदेही तय करनी होगी । जिससे जनतंत्र का विश्वास बना रहे ।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. संजय व्दिवेदी, मीडिया भूमंडलीकरण और समाज ।
2. जय प्रकाश त्रिपाठी , मीडिया हुँ मैं ।
3. मनोहर श्याम जोशी, मास मीडिया और समाज हरिभूमि, समाचार पत्र
4. Patrika.com
5. Hindiduniya.blogpost.com
6. www.bbc.com